आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024
Received: 15/12/2024; Reviewed: 18/12/2024; Accepted: 20/12/2024; Published: 30/12/2024

आत्मकथा आपहुदरी: नारी शोषण की पीड़ा

[1]शोधार्थी - प्रो.युवराज सुभाष जाधव
डॉ.तात्यासाहेब नातु कॉलेज
मार्गताम्हाने,जिला-रत्नागिरी
[2]शोध निर्देशक - डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल,
एसोसिएट प्रोफेसर,
एस. जी. आर्टस, साइंस एंड जी.पी. कॉमर्स कॉलेज,
शिवले, तहसील-मुरबाड, जि. ठाणे

[1]प्रो.युवराज सुभाष जाधव, [2]डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल, **आत्मकथा आपहुदरी: नारी शोषण की पीड़ा**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024,(303-311)

अनुरूपी लेखक - [1]शोधार्थी - प्रो.युवराज सुभाष जाधव, डॉ.तात्यासाहेब नातु कॉलेज,मार्गताम्हाने,जिला-रत्नागिरी,
सह-लेखक - [2]शोध निर्देशक - डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल, एसोसिएट प्रोफेसर, एस. जी. आर्टस, साइंस एंड जी.पी. कॉमर्स कॉलेज, शिवले, तहसील-मुरबाड, जि. ठाणे।

शोध सार:

भारतवर्ष के वेदोत्तर कालखंड के रामायण , महाभारत से लेकर आज के परिपेक्ष्य में घटित दिल्ली निर्भया हत्याकांड ,मुंबई के बदलापुर में हुई बाल अत्याचार वारदात जैसी घटनाओंने' 'नारी केवल एक भोग वस्तु' , 'यौन शोषण का साधन हैं' , ऐसी परंपरागत पुरुष-सत्ताक समाज व्यवस्था में स्थित 'रावण' जैसे भेड़िए अनगिनत साल से आज तक नारियों को अपनी इच्छा पूर्ति का साधन मानते आ रहे हैं। 'जगतजननी' नारी समाज के हर एक मुकाम पर शोषण का शिकार बन रही हैं। आज तक का नारियों का इतिहास बताता आया है

कि समाज में बेटी ,माता, पत्नी जैसे किरदार निभाने वाली नारियां अत्याचार से रूबरू होते आ रही है हैं। अत्याचार सहने में सामान्य परिवार में जन्मी पुनिया ,निर्मला, कपिला जैसी नारियों से लेकर सामंती परिवार की रमणिका गुप्ता जैसे अभिजात्य परिवार की नारियां भी इससे छूट नहीं सकी। वैसे तो पुराण में रामायण की सीता भी या महाभारत की द्रौपदी भी इसे अत्याचार से मुक्त नहीं हो सकी। यही इतिहास आज के परिप्रेक्ष्य में दुगने गति से नारियों पर अत्याचार कर रहा है। रमणिका गुप्ता ने अपनी आत्मकथा आपहुदरी में अपने साथ हुए अत्याचार तथा यौन शोषण की उन सभी घटनाओं को निर्भयता से व्यक्त किया है। रमणिका मानती थी कि उनकी यह आत्मकथा उनके जीवन में घटित घटनाओं ,टकराहटो, संघर्षों, भटकावों का आकलन है। प्रस्तुत प्रपत्र के माध्यम से रमणिका गुप्ता एक सामंती परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी समाज के हर एक मुकाम पर किस प्रकार भेड़ियों द्वारा यौन शोषण की शिकार हुई है, यह लेखिका के उन सभी अनुभूतियों को आत्मकथा 'आपहुदरी' के माध्यम से किस प्रकार बेबाक अभिव्यक्ति दी है, आदि को दर्शाने का प्रयास किया गया है ।

शब्द कुंजी- यौन शोषण , उत्पीड़न, बलात्कार ,आपहुदरी, स्वच्छंदता, वर्जना |

'आपहुदरी' आत्मकथा-

समाज में अत्याचारित नारी समाज से तथा अपनी इज्जत से भयभीत होकर गोपनीयता को कभी प्रकट नहीं करती। रमणिका ने बचपन से ही नारी पीड़ा की इसी गोपनीय ढंग को तोड़ते हुए निर्भयता से अपने विचार अभिव्यक्ति को बल प्रदान किया ।अतः रमणिका ने अपनी आत्मकथा में नारी पीड़ा की उन सभी वर्जनाओं की खुलकर अभिव्यक्ति करते हुए अपने यौन शोषण की पीड़ा को स्पष्ट किया है।रमणिका को ज्ञात है की नारी परंपरा से लेकर आज तक शोषण से पीड़ित है। एक अभिजात्य परिवार में रहकर अगर वह इतने अत्याचार से पीड़ित है, तो सामान्य परिवार में जन्मी पुनिया,निर्मला किस प्रकार अत्याचार सहती होगी यह अंदाजा करते हुए रमणिका ने समाज की उन सभी नारियों को अपनी आत्मकथा से संघर्ष द्वारा उभारने का ढाढस प्रदान करती है। अपनी आत्मकथा के भूमिका में वह लिखती है "-हारना मेरी नियति नहीं है!" औरत की नियति भी हार कर बैठ जाना नहीं, गिर कर फिर उठना है, संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना है।" (1) अतः रमणिका समस्त नारी जाति को प्रेरणा देते हुए समस्या से उभरने का संदेश देती है। अपने आत्मकथा के दृष्टिकोण के बारे में वह कहती है- "आपहुदरी की यह कथा एक स्त्री की दृष्टि में मेरे जीवन में घटी घटनाओं, टकराहटों, संघर्षों और भटकावों का ऑकलन है|" (2) रमणिका ने बचपन से लेकर विवाहोत्तर जीवन के भटकावों तक समाज द्वारा मिली पीड़ा को आपहुदरी आत्मकथा में व्यक्त किया है। मैंने एक संशोधक होने के नाते रमणिका के इस जीवन यात्रा में मिली पीड़ा को प्रस्तुत चार भागों में बांटकर लेखन किया है।

बालिका अवस्था में हुआ यौन शोषण-

रमणिका का जन्म अप्रैल 22 ,1930 को पंजाब के एक उच्च ,संभ्रांत ,क्षत्रिय जमींदार परिवार में हुआ था। परिवार में सुख के सभी पायदान मौजूद थे। घर में नौकर चाकरों की तादाद थी। पिता पेशे से डॉक्टर होने के कारण हमेशा घर से बाहर तथा माता लीलावती का रमणिका को ' पारंपरिक एक लड़की है- हमेशा बंधन में बंदिश्त रहे' , ऐसी सोच होने के कारण रमणिका से हमेशा प्रताड़ित व्यवहार करती थी। परिणामस्वरूप रमणिका बाल्यावस्था में सुख देनेवाले 'राजकुमार' की खोज में हमेशा रहती थी | अतः मां से हटकर वह स्वच्छंदतावादी जीवन अपनाने लगी। माता-पिता की यही अपने लड़की के प्रति नजरअंदाज प्रवृत्ति के बदौलत रमणिका बाल्यावस्था में यौन शोषण की शिकार होती रही। बाल्यावस्था में शरीर में हो रहे उन सभी परिवर्तनों को महसूस करते हुए एक ऐसी 'राजकुमार' की खोज में रमणिका रहती थी जो उसे प्यार दे सके। बाल रमणिका की इन्हीं बाल सुलभ इच्छाओं को तृप्ति देने का प्रयास परिवार के नौकरों द्वारा होने लगा। मजले भाई के प्रेम प्रसंग ने छोटी रमणिका में प्रेम के रंग भरना शुरू कर दिया था । पिताजी के रंगीले स्वभाव तथा उन्हें मिलने के लिए आने वाली अनेक महिलाओं से छोटी रमणिका के मन में चंचलता के गुण भरना शुरू कर दिया । परिणामस्वरुप नाना के घर में गई रमणिका को दोपहर के समय नौकर उसके कमर को गुदगुदा कर प्यार से बातें करके बरामदे में लेकर चला गया। बालसुलभ रमणिका नौकर के इस अंदाज को पहचान न सकी। "अन्दर घुसते ही नौकर ने मुझे जमीन पर लिटा दिया। मैं यंत्रवत-सी बिना बोले लेट गयी। मेरे और उसके पांव फूलदान से टकराते, तो वह बज उठता था। आवाज़ सुनकर नानी ने पूछा, "क्या खटक रहा है? क्या गिरा?" वह बिना प्रवेश किए अधूरा ही धोती सम्भालता हुआ उठकर बाहर भागा |" (3) नादान उम्र में रमणिका का पहली बार किया गया यह यौन शोषण उसके मन पर गहरा असर डालता गया। माता-पिता के इसी नजर अंदाजी स्वभाव के कारण आज मुंबई के बदलापुर की घटनाएं विश्व के कोने-कोने में घटित हो रही है|परिवार में अच्छाई का बुरखा पहने रामू नौकर ने तो छोटी रमणिका को राजकुमार की कहानी सुनाते -सुनाते रात के समय रमणिका की सलवार निकाल कर उसके कच्चे शरीर से खिलवाड़ करता रहा। पटियाला में नाना के घर में रमणिका छुट्टियों में जाती तब उसे ताऊ का बेटा हरबंश द्वारा दी गई जबरन यौन अनुभूति से रमणिका तन मन से घबरा जाती है।" मैंने सोए से उसे जगाया और सवाल का हल समझाने को कहा । पहले तो वह झुंझलाया, फिर बैठकर मुझे बताने लगा। मैं समझने में मग्न थी कि एकाएक उसने मुझे चूमना शुरू कर दिया। मैं बेहद घबरा गयी। हतप्रभ रह गयी। पता नहीं क्यों मुझे चिल्लाना उचित नहीं लगा। छूटने की कोशिश की, पर कहां भाई और कहां मैं? भाई ने मुझमें प्रवेश करने की कोशिश की, पर नहीं कर पाया। उसने मेरा मुंह दबा दिया, कहीं मैं चीख न पड़ूं |"(4)

मास्टर पूरनचंद का ज्ञान ज्ञाता 'शिक्षक व्रत' को कलंकित करने वाला घिनौना बर्ताव

भारतीय समाज में 'शिक्षक' को हमेशा सम्मान दिया गया है। वह कभी भक्षक नहीं बनता। रमणिका

के सामंती परिवार में लड़कियों को शिक्षा के लिए बाहर भेजने पर पाबंदी थी। अतःघर में ही पढ़ाई होने के उद्देश्य से एक आर्य समाज तत्वों के प्रभाव वाला पूरनचंद मास्टर को नियुक्त किया गया। आर्य समाज के तत्वों का केवल दिखावा करने वाले उसे मास्टर ने पूरे शिक्षक की व्यवसाय को कलंकित करते हुए बालिका रमणिका को पढ़ने के बहानेबाजी बनाते हुए रमणिका के माता-पिता का विश्वास प्राप्त किया तथा रमणिका को बाल्यावस्था से लेकर उसके विवाह तक अनगिनत बार उसका यौन शोषण करता रहा। सातवीं कक्षा में पढ़ने वाले रमणिका जब स्कूल जाती थी तब एक नारीलोलुप दर्जी अपना 'लिंग' निकालकर रमणिका तथा उसकी सहेली को दिखाता रहता था। इस पीड़ा से रमणिका की रक्षा करने वाला बलराम जैसा दोस्त रमणिका के लिए एक अच्छा हरदम बन जाता है, लेकिन इसी बलराम के प्रेम को पूरनचंद मास्टर ब्लैकमेल का रास्ता बनाकर रमणिका को भोगने का प्रयास करता है।सर्दी के दिनों में अपने ही बिस्तर पर बालिका रमणिका को लेकर सोने वाला पूरनचंद के अनुभव बताते हुए रमणिका आत्मकथा में बताती है कि- " फिर उसने रजाई के अन्दर ही अन्दर मेरे गुप्तांगों को टटोलना शुरू कर दिया। एक दिन उसने एकाएक अपना हाथ बढ़ा कर मेरे वक्ष को छू लिया, जहां अब छोटे-छोटे दो उभार जन्म ले रहे थे। उसने उन्हें धीरे से मरोड़ा। दर्द हुआ पर मेरे भीतर कुछ गुदगुदाया भी और कुछ ऐसा अहसास हुआ जैसे यह कोई राज़ की बात है।" (5) उसने धीरे-धीरे अपनी ऊंगलियों से मुझे छुआ। वह मुझे अपने पुरुष के लिए तैयार कर रहा था। वह अब मुझे अपना पुरुष पकड़वा देता, आंखों के इशारे से उसे सहलाने के लिए कहता |(6) आजकल शिक्षा व्यवस्था में भी पूरनचंद जैसे भेड़िया शिक्षक रक्षक की बजाय भक्षक बनते चले जा रहे हैं। पूरनचंद ने रमणिका और वेद प्रकाश के विवाह में भी अड़ंगा निर्माण करने का कई बार प्रयास किया।

कौमार्य अवस्था में हुआ यौन शोषण

सातवीं कक्षा में पढ़ने वाले रमणिका अपनी सहेली तोषी के साथ जब विद्यालय जाती थी तब इन लड़कियों को देखकर एक दर्जी दुकान के बाहर आकर अपना लिंग निकाल कर उन लड़कियों को खुलेआम दिखता था। आजकल समाज में ऐसे भेड़िए छोटे बच्चों को अपने हवस का शिकार बनाते हैं जैसे मुंबई के बदलापुर में शिंदे नामक एक दरिंदे ने 5 साल की लड़की पर ऐसा ही बलात्कार करके उसका यौन शोषण किया।घर में रमणिका के बड़े भाई की पत्नी अर्थात भाभी ने भी रमणिका से लेस्बियन संबंध बनाते हुए यौन संबंध रखकर अपने शरीर की भूख को शांत करने का प्रयास करते हुए रमणिका को लेस्बियन संबंधों की अनुभूति प्रदान कर दी। पूरनचंद जैसे मास्टर ने तो रमणिका और उसकी छोटी बहन को भी अपने हवस का शिकार बनाया। रमणिका की बड़ी बुआ ने मास्टर की इस व्यवहार पर जब आपत्ति जताने की कोशिश की तब रमणिका के माता ने तो उल्टे मास्टर पर गैर विश्वास रखते हुए लड़कियां ही शैतान है ,जो पढ़ना नहीं चाहती इसलिए मास्टर पर शिकायत दर्ज कर रही है ,ऐसा बोलकर शोषण करने वाले दरिंदे लोगों को और भी प्रोत्साहित कर दिया। ऐसे परिवारों में अनगिनत पूरनचंद छोटे-छोटे रमणिकाओं का शोषण करता ही रह रहा है।बुआ का लड़का जितेंद्र ने रमणिका के मन के साथ खेलते हुए उसका यौन शोषण किया और बाद में विलायत में शिक्षा लेने के उद्देश्य से जाकर

रमणिका से नाता तोड़ दिया।

युवावस्था में यौन शोषण

घर में हुए यौन शोषण से पीड़ित रमणिका उससे मुक्ति पाने के लिए एक ऐसे 'राजकुमार' की खोज में हमेशा रहती थी। अंतर्जातीय विवाह को अपनाते हुए रमणिका ने वेद प्रकाश जैसा गैरजाती के बनिया के व्यक्ति से विवाह किया। शादी उपरांत नारी सुलभ इच्छा रखनेवाले रमणिका को लगा अब सुखमय जीवन मिलेगा। अपितु वहां रमणिका को पीड़ा ही मिली|पुरुष-सत्तात्मक समाज में वेद प्रकाश पति होने का भाव रखते हुए रमणिका को अपने छोटे भाई के साथ तथा रमणिका को पढाने के लिए आने वाले एक प्रोफेसर के साथ नाजायज संबंध रखने का शक निर्माण करता करता हुआ उसके नारीत्व पर शक करता है। भारतीय नारी के समान परिवार का विरोध झेलते हुए अंतरजातीय विवाह करने वाली रमणिका अपने पति के लिए तन मन धन से समर्पित हो गई थी। पति से अविश्वास की भावना रखने से रमणिका टूट जाती है तथा ऐसे पति को सबक सिखाने के लिए शक को ही सत्य में बदला लेन की सौगंध खाती है।

वेद प्रकाश से शादी करने से 5 दिन पहले शादी में गवाह बनने का वचन देकर रमणिका के भाई का एक रिटायर्ड आर्मी ऑफिसर रोहतक के डिप्टी कमिश्नर 'कश्यप' ने रमणिका को अपने घर दिखाने के बहाना करते हुए लेकर गया तथा रमणिका पर उसने बलात्कार करने की असफल कोशिश की। 5 दिन के बाद रमणिका विवाहित होने वाली है, उसे नारी का जीवन बर्बाद हो सकता है, यह उस आर्मी ऑफिसर ने बिल्कुल भी नहीं सोचा।

विवाह उपरांत यौन शोषण

'जगतजननी नारी' समाज में बेटी, माता, पत्नी की भूमिका निभाते समय हमेशा पवित्रता को संभालती रहती है। जब उसके पवित्रता पर लांछन लगाया जाता है, तब वह बौखला उठाती है। सीता मैया को भी इसी पवित्रता के लिए अग्नि परीक्षा देनी पड़ी। बचपन से ही एक राजकुमार की खोज में रहने वाले रमणिका पर भी विवाह उपरांत पति द्वारा शक करने पर रमणिका तन मन से बौखला उठाती है। अपने भाई के पत्नी से नाजायज संबंध रखने वाला वेद प्रकाश अपनी पत्नी पर शक करते हुए कहता है-"बचपन से कई पुरुषों को चखती रही हो, एक से तुम्हारा मन नहीं भरेगा |" (7) तात्पर्य पुरुष कितने भी यौन संबंध रख सकता है, लेकिन नारी को सभ्यता का पाठ पढ़ाते हुए बंधन में रखता है|

अपने पति प्रकाश के प्रमोशन के लिए उसके अफसर ने भी रमणिका से यौन संबंध की मांग की तब अपने पति के लिए समर्पित रमणिका ने यह भी समर्पण कर दिया। पति प्रकाश के नौकरी का तबादला भुसावल में होने पर घर की समस्या आने पर रमणिका अपने पिता के पास पटियाला आ जाती है। रमणिका को नृत्य तथा अभिनय में मार्गदर्शन करने के लिए आने वाले बलजीत ने रमणिका को फिल्म इंडस्ट्री में नायिका का रोल देने के बहाने उसका यौन शोषण किया। रमणिका को बलजीत की असलियत का पता मुंबई में जाने पर चला तब वह दुख से बेहाल हो जाती है। रोहतक के एडीएम श्री। आहूजा द्वारा रमणिका तथा उसके भाभी का भी

यौन शोषण किया गया। रमणिका को पढ़ाने के लिए आने वाले प्रो।वाजपेयी जी ने रमणिका के भवानिकता का फायदा उठाकर संबंध स्थापित कर दिए। जिस राजा को जनता का रक्षक कहा जाता है वह भी भक्षक बन जाता है। पटियाला के महाराजा साहब ने भी रमणिका को अपने पास बुलाया और हेलीकॉप्टर से घुमाते समय उन्होंने रमणिका से यौन संबंध की इच्छा व्यक्त की ;जैसे नारी केवल भोग वस्तु है, ऐसी उस महाराज की धारणा थी। अपने पति के रवैया से परेशान रमणिका ने स्वावलंबी होने का फैसला किया तथा एक इंश्योरेंस एजेंट के रूप में नौकरी करते हुए इंश्योरेंस कंपनी के श्री। अरोड़ा तथा संजय से मुलाकात करके इंश्योरेंस कंपनी में नौकरी करना शुरू कर दिया। नौकरी करते समय क्लाइंट को जानकारी देना तथा देह व्यापार करना भी पड़ता है ऐसी भयानक अनुभूति रमणिका को नौकरी करते समय मिल गई । आज हमारे देश में नौकरी की जगह तमाम नौकरी करने वाले नारियों का ऐसा ही यौन शोषण होता है। कंपनी एजेंट संजय ने स्वयं रमणिका को नौकरी का लालच दिखाकर उसका यौन शोषण किया तथा इंश्योरेंस के बहाने अमृतसर ले जाकर एक सेठ के साथ रमणिका का सौदा किया। सेठ ने आधी रात को रमणिका को पास बुलाकर कहां कि संजय को मैं पूरे पैसे दे चुका हूं, आपके साथ संबंध बनाने के। स्वावलंबी बनने का निश्चय करनेवाले नारियों पर अत्याचार बढ़ते चले जा रहे हैं। एक बार मसूरी घूमने के प्रसंग में रमणिका पति के साथ अमृतसर के व्यापारियों के साथ जाती है, वहां भी पति प्रकाश के पास पैसों का इंतजाम न होने पर होटल के मैनेजर जो पैसा प्रकाश को देते हैं,उसके बदले रमणिका का यौन शोषण करते हैं। श्री। सिब्बल दिखने में सभ्य लेकिन सफेदपोश इंसान भी रमणिका का यौन शोषण करता है। राघवाचार्य जैसा लाइजन ऑफिसर पैसों का लालच दिखाकर रमणिका से यौन संबंध स्थापित करता है। जीवन जीते समय रमणिका भटकाव वाला जीवन अपनाती है। पति प्रकाश का मुंबई से मद्रास तबादला होने पर रमणिका पति, बच्चों के साथ जिस रेल से यात्रा कर रही थी,उसे यात्रा के दरमियान एक हरी -हरी आंख वाला युवक भी रमणिका पर भावनिक जाल निर्माण करते हुए रात में वह उसका यौन शोषण करते हुए रमणिका को एक भयानक बीमारी प्रदान करके जाता है। मद्रास में आने पर रमणिका पति के साथ जिस इलाके में रहती थी ,वहां का प्रकाश के ऑफिस का लेबर इंस्पेक्टर जो एक आगंतुक था, वह भी रात के समय रमणिका के घर में आकर रमणिका को यौन यातनाएं देकर जाता है। रमणिका पर हुई यौन यातनाओं का इतना गंभीर परिणाम निकलता है कि उसकी दोनों ओवरियां खराब हो जाती है। तुरंत अस्पताल में इलाज करके केवल ओवरी बचाई जाती है। रमणिका जीवन के हर एक हालात का सामना करते हुए स्वयं को थेथर के पौधे के समान मानती है। " धनबाद में आकर मैंने एक पौधा देखा, जिसका नाम था 'थेथर!' कभी मरता ही नहीं वह पौधा। उसे चाहे जहां फेंक दो, वह वहीं उग आता है, बढ़ जाता है। मैं उसकी तरह, हर जगह उगने की, जीने की क्षमता हासिल कर औरत को नंगा करने वालों के मुकाबिल लड़ूंगी ! औरत की पहचान को जिन्दा रखूंगी! "(8)

राजकीय क्षेत्र में हुआ यौन शोषण

मद्रास से जब रमणिका के पति का तबादला धनबाद में हुआ, तो धनबाद में आदिवासी ,दलित,किसानों के विस्थापन, आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन अधिकार प्रदान करने के कार्य में रमणिका ने स्वयं को सामाजिक, राजकीय क्षेत्र में समर्पित कर दिया। कोयला खदान मैं काम करने वाले मजदूरों के न्याय हक के लिए भी रमणिका ने सामाजिक योगदान देना शुरू कर दिया। कोयला खदान के राष्ट्रीयकरण कार्य करते समय रमणिका को यौन शोषण की समस्या से गुजरना पड़ा। राजकीय क्षेत्र में नारियों को प्रायःशोषण की दृष्टि से देखा जाता है यह रमणिका ने अपनी जीवन यात्रा जीते समय अनुभूत कर लिया। बिहार राज्य का राज्य मंत्री झा तथा उसका एजेंट दिलीप झा ने रमणिका को झूठ बतलाकर दिल्ली कमेटी बैठक में ले जाने का बहाना करते हुए रमणिका को दिल्ली लेकर गए और वहां उन्होंने रमणिका का यौन शोषण किया। धनबाद वापस आने पर रमणिका ने इस पर गुस्सा व्यक्त करने की कोशिश की परंतु गुस्से के अलावा वह कुछ भी नहीं कर सकी। राजनीतिक पुरुष राजनीति में आई रमणिका जैसी महिलाओं को सेक्स का शिकार बनाते रहे। एक बार रमणिका मंत्री राजा बाबू के पास गई तब वहां भी राजा बाबू ने रमणिका का यौन शोषण कर दिया। भूमिहार के डी।एस।डी ।शर्मा ने रमणिका के पति पर पाकिस्तान से नाजायज संबंध है, ऐसा कारण बताकर इसे छूटने के बदले में रमणिका से यौन संबंध की मांग कर दी तथा रमणिका से संबंध स्थापित कर लिए। रमणिका ने अपने पति की सुरक्षा के लिए यह भी समर्पण कर दिया। जयपुर के सम्मेलन के बाद श्री। राजीव रेड्डी जैसे कैबिनेट स्तर के केंद्रीय मंत्री ने भी रमणिका को अपने रेस्ट हाउस पर ले जाकर रमणिका का यौन शोषण किया। वह मंत्री रमणिका से सीधी तरफ बोलता है कि आज तक मेरी शारीरिक इच्छा पूर्ति के लिए पार्टी के लोग हमेशा मेरे पास लड़कियों को भेजते रहते हैं। " तुम्हारा मुख्यमंत्री तो उस नर्स को भेजता है मेरे पास, अपनी राजनीति ठीक करने के लिए|" (9) तात्पर्य है राजनीति में,फिल्म इंडस्ट्री में अगर कैरियर बनाना है तो ऐसे कई नारियों को यौन शोषण से गुजरना पड़ा है। इस प्रकार आजकल के राजनीतिक नेताओं के भोग विलास के लिए अनगिनत महिलाओं का यौन शोषण हो रहा है। श्री। राजीव रेड्डी के इसी यौन प्रवृत्ति के कारण इंदिरा गांधी जी ने सर्वपरी राष्ट्रपति पद के चुनाव में रेड्डी जी का विरोध किया था। संविद सरकार में रहे पुलिस मंत्री रामानंद तिवारी ने रमणिका पर अत्याचार करने की कोशिश की। रमणिका ने इसकी शिकायत कांग्रेस हाई कमांड तक की परंतु फिर भी कलंक तो रामानंद पर न लगाते हुए रमणिका पर ही लगाया गया। राजनीति के सफेदपोश लोगों ने रमणिका को "इतनी रात रामानंद के पास क्यों गई थी?" ऐसा सवाल पूछते हुए पुरुषी मनोवृति ने नारियों पर अत्याचार करके अपना अधिकार मानते हुए उन्हें ही कलंकित होने का पुरस्कार प्रदान किया है। " अंत में बाहर वाले तमाशबीनों ने औरत को ही कसूरवार माना। ठगनी, माया कह डाला। ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती ! जिससे ब्रह्मा ने सम्भोग कर सृष्टि को जन्म दिया। मैं माया ठगनी, ब्रह्मा को भरमाने वाली और ब्रह्मा निस्पृह, निष्कपट, निश्छल, महान वने रहे। कुछ ने द्रौपदी की संज्ञा दे डाली, जिसने भाइयों में महाभारत रचा दिया यानी कि क्या हर्ज था अगर जुए में हारी जाने के बाद द्रौपदी दुर्योधन और उसके सौ भाइयों के यहां बैठ

जाती? खून-खराबा तो न होता |"(10) तात्पर्य सफेदपोश , स्वार्थी लोग युद्ध का कारण नारी को ही मानते हैं। भोला प्रसाद जैसे मंत्री रमणिका को 'दरवाजा खुला रखना' ऐसी भर्त्सना करते हुए जैसे नारी शोषण अपना अधिकार है, ऐसे बोलते थे। एक बार तो भोला प्रसाद ने रमणिका से जबरदस्ती संबंध रखने की कोशिश की इसमें असफल होने पर उन्होंने रमणिका से संबंध बनाने के लिए अपने बॉडीगार्ड को भेज दिया। जैसे नारी एक शोषण का साधन है, ऐसा राजकीय व्यक्ति सोचता है, यह रमणिका ने महसूस किया। फौजी कर्नल राज सिंह ने भी रमणिका का यौन शोषण किया। इस प्रकार एक नारी जीवन जीते समय रमणिका ने बचपन से लेकर अपने राजनीतिक जीवन यात्रा तक जीवन के कई भटकाव देखें। पुरुष-सत्तात्मक समाज में रमणिका ने उन सभी पीड़ाओं को सहा है। इसी शोषण की पीड़ा को रमणिका ने अपनी आत्मकथा में व्यक्त किया है। अन्य नारी के प्रति सम्मान की भावना रखने वाली रमणिका ने हमेशा नारी का सम्मान किया है। फौजी राज सिंह द्वारा उसकी पत्नी के सामने रमणिका से प्यार जताने पर रमणिका का उत्तर उसके नारी सम्मान की भावना को व्यक्त करता है-"कम से कम मेरे सामने मेरी ही जाति का अपमान तो मत करो।" (11)

निष्कर्ष-

वेदोत्तर कालखंड से लेकर आज तक का मनुष्य जाति के इतिहास पर चिंतन करेंगे तो पता चलता है कि भारतीय पुरुष-सत्तात्मक समाज में भारतीय नारी हमेशा प्रताड़ित रही है। समाज में नारी को एक भोग वस्तु समझने वाले दोमुंहे वाले भारतीय समाज ने नारी को एक तरफ जगतजननी मानते हुए उसे हमेशा बंधन में बांधकर रखा है। "चूल्हा संभालना तथा बच्चों को जनना"यही मर्यादित सोच मनुष्य समाज ने नारियों के प्रति रखी है। एक बेटी, माता, पत्नी भूमिका निभाते समय नारियों ने हमेशा समर्पण भाव रखा है। पुरुष मनोवृति ने नारियों पर इतने अनगिनत अत्याचार किए हैं कि उसे शब्दबदध करते हुए आंखों में पानी आ जाता है| एक नाई के दुकान में बाल काटने के प्रसंग में रमणिका को जो अनुभूति मिलती है, इससे वह इतनी थक जाती है कि समाज में उसे हर जगह भेड़िए दिखाई देते हैं, जो केवल नारी को शोषण का ही साधन मानते हैं।"औरत कुछ भी करे, उसे यौन से ही क्यों जोड़ दिया जाता है? काश मैं पुरुष होती।' मन में एक इच्छा मचल उठी।(12) क्या नारी केवल यौन शोषण का ही साधन है? रमणिका गुप्ता ने अपनी आत्मकथा 'आपहुदरी' में स्वयं पर हुए यौन शोषण की पीड़ा को व्यक्त करते हुए समाज के उन तमाम अनगिनत महिलाओं के प्रति संवेदना रखते हुए नारी मुक्ति की इच्छा व्यक्त की है। साथ ही नारी को संघर्ष करने का ढाढस प्रदान करते हुए हर मुश्किल में लड़ने की सीख भी वह देती है। रमणिका ने अपनी आत्मकथा में स्वयं पर हुए अत्याचार को खुलकर लोगों के सामने व्यक्त किया है। रमणिका चाहती है कि हर एक नारी अपने अत्याचार को इस प्रकार गोपनीय न रखकर व्यक्त करेंगे तभी समाज में स्थित भेड़िए कम हो जाएंगे तथा उन पर अंकुश निर्माण होगा। लेखिका मानती है कि मैं पुरुष बनकर ही नहीं तो स्त्री रहकर ही ऐसे भेड़ियों को सबक सिखा सकती हूं। एक संशोधक होने के नाते मैं आशा करता हूं कि समाज ने नारी के प्रति सम्मान की भावना रखते हुए,उसे प्रेरणा प्रदान करते हुए, उसे मानवीयता का जीवन प्रदान करना चाहिए। इसके अलावा

जगतजननी नारी की सद्भाव, प्रेरणा, परिवार,समाज,देश के लिए समर्पित भावना हमें हमेशा स्मरण में रखनी चाहिए |नारी का जीवन एक कल्पवृक्ष के समान है।हमें उसके प्रति सम्मान रखना चाहिए।मनुष्य को चलना, बोलना, लिखना, पढ़ना नारी ही सिखाती है । नारी की मानवीय सेवा की प्रवृत्ति, परिवार, समाज, देश के लिए समर्पित विशेषता,कर्तव्यपरायणता,अपना खून निचोड़कर बच्चे को पालने वाली मातृवत्सलता जैसी विशेषताओं को अगर समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्मरण करेगा तो सचमुच नारी शोषण से बच सकती है।

संदर्भ संकेत-

1. गुप्ता रमणिका , आपहुदरी (आत्मकथा), सामयिक प्रकाशन ,नई दिल्ली, सातवां संस्करण, (सच बोलना क्यों जरूरी) , पृष्ठ संख्या 21।
2. वहीं (सच बोलना क्यों जरूरी) , पृष्ठ संख्या 24)।
3. वहीं (बचपन का पहला अहसास) , पृष्ठ संख्या 74।
4. वहीं (अपराध बोध का बीज) ,पृष्ठ संख्या 84।
5. वहीं (गलत का अहसास) , पृष्ठ संख्या 86।
6. वहीं (गलत का अहसास) , पृष्ठ संख्या 86।
7. वहीं (ईर्ष्या और डाह) ,पृष्ठ संख्या 252।
8. वहीं (मद्रास) , पृष्ठ संख्या 340।
9. वहीं (पैसों की जरूरत का अहसास) ,पृष्ठ संख्या 286।
10. वहीं (औरत : गुटबंदी का एक तेज हथियार) ,पृष्ठ संख्या 403 ।
11. वहीं (औरत का अंतरंग मन) ,पृष्ठ संख्या 444 ।
12. वहीं (ब्यूटी पार्लर) , पृष्ठ संख्या 266।

****